राजस्थान की चित्रकला

राजस्थान एक विशाल मरूस्थलीय प्रदेश है जिसमें 16 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक कई छोटी–बड़ी रियासतें तथा ठिकानों के राजपूत राजा व जागीरदार जो कलाप्रेमी थे उनके राजप्रसादों में भित्ति चित्रण की श्रेष्ठ परम्परा विद्यमान रही। उनके आश्रय में निजी व मौलिक विशेषताएँ रखने वाली कला शैलियों का अद्‌भुत विकास हुआ। इस पर वैष्णव सम्प्रदाय का प्रभाव अत्यधिक था। उनकी कला में नवीनता, सुमधुरता, भावुकता व रहस्यात्मकता थी। राजस्थान की पोथी चित्रण कला का मूल स्त्रोत लोक चित्रकला या प्राचीन अपभ्रंश कला या अजंता शैली ही है। इसी कारण इस शैली को पूर्ण भारतीयता का दर्जा दिया गया है। राजस्थानी चित्रकला को भौगोलिक दृष्टि से तथा शैलीगत आधार पर 4 (चार) भागों में बाँटा गया है–

1. मेवाड़ – उदयपुर, नाथद्वारा आदि।
2. मारवाड़ – जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़ आदि।
3. ढूढाड़ – जयपुर, अलवर आदि।
4. हाड़ौती – बूँदी, कोटा आदि।

राजस्थानी चित्रकला के विषय – राजस्थान के लघु एवं पोथी चित्रों के निर्माण एवं विकास का मुख्य उद्‌देश्य अपने आराध्य देव की स्तुति व इसके सम्बन्धित चित्रों का निर्माण करना था।

1. पौराणिक एवं कृष्णलीला के चित्र – राजस्थानी चित्रकारों ने प्राचीन हिन्दू धर्म–ग्रन्थों, महाभारत, रामायण, भागवत, पंचतंत्र पर चित्रण किया है तथा रसिक प्रिया, गीतगोविन्द, सूरसागर, रसिक मंजरी आदि ग्रंथों पर भी अद्‌भुत चित्र बनाये हैं। इसके अतिरिक्त कृष्ण लीलाओं का चित्रण, भगवान राम व कृष्ण व विविध देवी–देवताओं को विभिन्न रूपों में चित्रण किया। इसी के साथ लोक देवता में तेजाजी, गोगाजी, रामदेव जी आदि के जीवन की घटनाओं को चित्रावलियों के माध्यम से बड़ा प्रभावी बनाया गया है, जिसे "फड़" या "फड़चित्र" कहा जाता है।

2. **रागमाला एवं ऋतुओं के चित्र –** राजस्थानी कला की तूलिका ने संगीत शास्त्र की राग–रागनियों को मूर्तिवत बनाकर कला के माध्यम से केनवास व पेपर पर उतार कर उनका दृश्य रूप–चित्र बनाने में श्रेष्ठता की महारत हासिल की। इन राग–रागनियों के चित्रों की विशिष्टता यह है कि उनका चित्रण ऋतुओं से साम्य रखते हुये किया गया है। इन चित्रों में राग–रागनियों के साथ ही अनेक प्रकार की नायिकाओं को मूर्त व साकार होकर उभारा गया है तथा वन–वाटिकाओं में आम, बड़, पीपल, केला, खजूर, चम्पा आदि के वृक्षों के चित्रों के साथ उनमें विचरण करने वाले चीते, शेर, साँप, ऊँट, गाय, हिरण, घोड़ा, चकोर, हंस, सारस, कुरंज आदि पशुपक्षियों को बनाया गया है।

ऋतुओं के चित्रों से सम्बन्धित इस शैली के ''ऋतु संहार'' तथा ''बारहमासा'' ग्रंथ प्रकृति के वातावरण व प्रभाव के भण्डार हैं।

3. **राजसी वैभव के चित्र –** राजा–महाराजाओं के जागीरदारों के सरदारों के व्यक्ति चित्र उनके महलों व दरबारों को भी बनाया गया हैं। साधु सन्तों के व्यक्ति चित्र की भी इस शैली में प्रधानता ग्लैशरीन है।

4. **घरेलू जीवन के चित्र –** राजस्थान के जनमानस का जीवन सदैव धार्मिक रहा है तथा घरेलू जीवन शुद्ध व सात्विक रहा है। इस शैली में ग्रामीण जीवन के हाट–बाजार, चौपालों, पनघटों, घर, खेत, खलिहानों के मनोरम चित्र बनाये गये हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ के चित्रकारों ने ग्वाले, शिक्षक, पनघट, काँटा निकालती तरूणी, अंजन लगाती तरूणी, अंगड़ाई लेती नवयौवना, दर्पण में मुख देखती स्त्री के चित्र इस शैली में जन जीवन के प्रतीक हैं। इस शैली में यात्रा करते यात्री पथिक, पेड़ों की छाया में विश्राम करते यात्री, पंखें से हवा करती नारी, हुक्के गुड़गुड़ाते ग्रामीण, थके हारे पथिक को पानी पिलाती स्त्री जो शान्ति, प्रेम व समानता के भावों की अभिव्यक्ति करते हैं।

मेवाड़ चित्रशैली

मेवाड़ चित्रशैली का क्षेत्र – मेवाड़ क्षेत्र राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है इसके अन्तर्गत चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, शाहपुरा, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ का क्षेत्र एवं जिले आते हैं। इस शैली का सौन्दर्य, राजसमंद व जयसमंद जैसी विशाल झीलों, अरावली पर्वत श्रृंखलाओं, विशाल किलों, झीलों में बने महल व शिकार दृश्य, राजप्रसाद आदि चित्रकारों को प्रेरणा देते हैं।

मेवाड़ चित्रशैली के प्रमुख विषय :– गीत गोविन्द, ढोलामारू, रागमाला, नायक–नायिका भेद, रसिक प्रिया, भागवत पुराण, रामायण आदि विषयों पर चित्रण कार्य किया गया है।

मेवाड़ चित्रशैली के प्रमुख विषेशताएँ :–

1. संयोजन एवं आकृतियाँ – महत्वपूर्ण व्यक्ति या घटना को मध्य में रखकर संयोजन किया गया है मानद आकृतियां चित्रों में आकृतियों की नाक लम्बी, गोल चेहरे, अण्डाकार चिबुक व गरदन के बीच का भाग अधिक भारी बनाये गये है।
2. **वेशभूषा –** पुरुषों को घेरदार जामा, मेवाड़ी पगड़ी तथा कमर में रंगीन पटका लगाये दिखाया गया है। स्त्रियों की वेशभूषा में पारदर्शी ओढ़नी तथा चोली व लहंगा पहने दिखाया गया है। गर्दन, कमर, भुजाओं व कलाइयों में काले फुंदने पहनायें गये हैं।

3. **आलंकारिक प्रकृति का चित्रण –** वृक्षों को अधिकांशतः झुण्डों में बनाया गया है। जल की लहरों को दिखाने के लिये लहरदार रेखाओं से बनाया गया है।
4. **पशु–पक्षी –** मेवाड़ शैली में अधिकांश चित्र कपड़े से बने खिलौने के समान पशु–पक्षी आलंकारिक ढ़ंग से बनाये गये है।
5. **भवन –** मेवाड़ के चित्रों में शिखर गुम्बददार, छज्जे, चबूतरे बनाये गये हैं। भवनों को सफेद रंग से सजाया गया है।
6. **रात्रि दृश्य –** मेवाड़ के चित्रों में रात्रि दृश्य दिखाने के लिये गहरी नीली या धुएं के रंग की पृष्ठभूमि में सफेद बिन्दु लगाकर तारों से पूर्ण रात्रि के दृश्यों में चन्द्रमा को दिखाया गया है।
7. **कृष्ण चित्रों की प्रमुखता –** मेवाड़ शैली में रागमाला चित्रों में कृष्ण को नायक तथा राधा को नायिका के रूप में दिखा गया है।
8. **सामाजिक जीवन–** मेवाड़ शैली में ग्रामीण जीवन, दरबार, जुलुस, विवाह, संगीत, उत्सव, नृत्य, युद्ध, आखेट आदि के दृश्यों को बड़ी सजीवता से बनाया गया है।

नाथद्वारा चित्रशैली

नाथद्वारा चित्रशैली का क्षेत्र –

राजस्थान की अरावली पर्वत श्रृंखला में उदयपुर के निकट बसा हुआ नाथद्वारा पुष्टि सम्प्रदाय का केन्द्र स्थल है तथा यह मेवाड़ शैली की उपशैली है। औरंगजेब के दमनात्मक कृत्यों के फलस्वरूप गोवर्धन पर्वत पर स्थित वल्लभ सम्प्रदाय के मुख्य मंदिर के श्रीनाथ जी की प्रतिमा को सुरक्षा की दृष्टि से नाथद्वारा में स्थापित किया गया।

नाथद्वारा शैली के मुख्य विषय एवं विशेषताएँ –

ब्रज तथा मेवाड़ की सांस्कृतिक परम्परा के समन्वय से धीरे–धीरे नाथद्वारा शैली का विकास हुआ। श्रीनाथजी के प्रकटीकरण तथा उनकी लीलाओं से संबंधित चित्र बनाये गये।

श्रीनाथ जी के स्वरूप के पीछे सजावट के लिये बड़े आकार के कपड़े पर जो पर्दे बनाये जाते हैं। उनको पिछवाई कहते हैं। श्रीनाथ जी के उत्सव तथा कृष्णलीला सम्बन्धित विषय के आधार पर पिछवाइयों पर चित्रण किया जाता है। नाथद्वारा की मौलिक देन पिछवाइयों पर बने हुये विभिन्न कलात्मक चित्र हैं।

मारवाड़ चित्रशैली

मेवाड़ चित्रशैली का क्षेत्र–मारवाड़ का लगभग पूरा क्षेत्र रेगिस्तानी है जिसमे बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, नागौर तथा शेखावटी के कुछ भाग रेतीले टीलों और धोरों के प्रतीक हैं। इस क्षेत्र का जन जीवन बहुत कठिन है परन्तु इस क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्परायें बहुत ही महान एवं श्रेष्ठ हैं। इस क्षेत्र में विकसित हुयी शैली को मारवाड़ शैली के नाम से जाना गया इस शैली की प्रमुख उपशैलियाँ जोधपुर, नागौर, पाली, मेड़ता, कुचामन, बीकानेर, और किशनगढ़ है।

मारवाड़ चित्रशैली के विषय – शिवपुराण, राम–कृष्ण की कथाएँ, बारह–मासा, राग–रागिनी, लोकदेवता–पाबूजी, हड़बूजी, मूमलदे, निहालदे के चित्र व कथाचित्र बनाये गये है।

मारवाड़ चित्रशैली की विशेषताएँ –

मानवाकृतियाँ – इस शैली की पुरुष आकृतियों में लम्बी व सलीके से बंधी हुयी दाढ़ी तथा गोल घुमावदार रौबीली मुँछे मुख्य विशेषता है। शरीर की तुलना में मुख मण्डल को छोटा बनाया गया तथा आंखें परवल के समान बड़ी बनायी गयी है। स्त्री आकृतियाँ आभूषणों से सुसज्जित एवं लम्बा बनाया गया है। खंजन पक्षी के समान नेत्र व गालों पर झूलती बालों की लट को विशेष रूप से बनाया गया है।

वेशभूषा – मारवाड़ी शैली में मानवाकृतियों की वेशभूषा में मुगल प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। उन्हें लम्बे घेरदार जामें तथा अलंकारिक शिखरदार पगड़ी पहने बनाया गया है।

प्रकृति – मारवाड़ में प्रकृति को बड़ी ही सहज रूप में बनाया गया है। इसमें उद्यान व बाग बगीचों का संयोजन बड़ी सफाई से किया गया। वृक्षों के झुरमुट में अनेक पक्षियों को बनाया गया है।

रंग – मारवाड़ शैली में खनिज रंगों का प्रयोग किया गया है। खनिज रंगों को पीस कर गोंद अथवा सरेस मिलाकर रंग तैयार किया जाता था। इस शैली में विशेष रूप से पीले रंग का प्रयोग अधिक किया गया है हाशियों में लाल रंग का प्रयोग किया गया है।

रेखाएँ – इस शैली में रेखाओं को अत्यधिक महीन व बारीक बनाया गया है। रेखाओं में गति व लय स्पष्ट दिखायी देती है।

किशनगढ़ चित्रशैली

किशनगढ़ चित्रशैली का क्षेत्र – मारवाड़ क्षैत्र की सबसे उत्कृष्ट एवं प्रमुख शैली किशनगढ़ में विकसित हुई। यह जयपुर, जोधपुर, अजमेर व शाहपुरा दरबार से घिरी एक छोटी रियासत थी। यह राजस्थान के मारवाड़ शैली का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। यह अरावली पर्वत श्रृंखला के मध्य छोटी–छोटी पहाड़ियों घिरी गोदोलाव झील के किनारे कसा हुआ है। जोधपुर राजा उदय सिंह के सबसे छोटे पुत्र किशन सिंह ने इसकी स्थापना की थी। इस शैली पर वल्लभ सम्प्रदाय का काफी प्रभाव है। सावन्त सिंह जो आगे जाकर नागरीदास के नाम से प्रसिद्ध हुये इनके काल में चित्रकला चर्मोत्कर्ष पर थी।

किशनगढ़ शैली के विषय – इस शैली के चित्रों का विषय गीत गोविन्द, भागवतपुराण बिहारीसतसई, कृष्ण व राधा तथा शिकार के दृश्यों को प्रमुखता से बनाया है। इसके अतिरिक्त नायिका भेद, चांदनी रात में नौकायन, दीपावली, रानियों की जल क्रीड़ा आदि भी प्रमुख है।

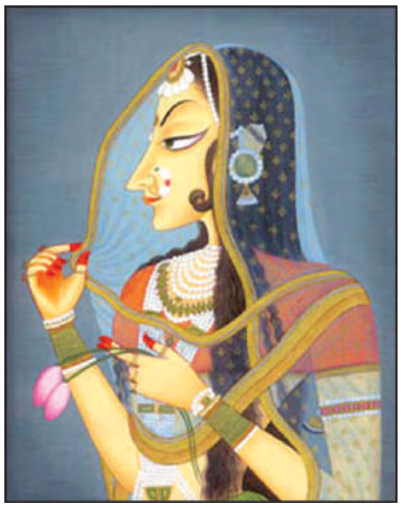

किशनगढ़ शैली की प्रमुख विशेषताएं –

मानवाकृतियां –किशनगढ़ शैली में स्त्रियों की आकृतियां को बहुत ही सुन्दर बनाया गया है उनके शरीर में कोमलता, लयात्मकता, पतली कमर, छरहरा बदन व उन्नत वक्ष बनाये गये हैं। उन्हें पारदर्शी चन्देरी ओढ़नी, चौली व लहंगा, पहने बहुत ही सुन्दर बनाया गया हैं तथा उन्हें गले में हार माथे के आभूषण, हाथों में कंगन कमर में करघनी आदि पहने बनाया गया है। उनके केश घुंघराले, लम्बे तथा कानों के पास गालों पर बालों की लट को बनाया गया है जो विशेष सुन्दरता लिये प्रतीत होती है। पुरुष आकृतियों को धोती पायजामा पहने बनाया गया है। उन्हें भी गले में मोतियों की माला व आभूषण पहनाये गये हैं।

मुखमुद्रा – इस शैली में मुखमुद्रा में खंजन पक्षी के समान नेत्र बनाये गये हैं, भौहें धनुष के समान तनी हुयी एवं आँखें कजरारी बनायी गयी है, नाक तीखी, उन्नत ललाट बनाया गया है।

प्रकृति – इस शैली की प्रकृति की छटा बड़ी निराली है। इसमें बाग–बगीचों के मध्य राधा–कृष्ण, प्रेमी प्रेमिका के रूप में दर्शाये गये हैं। इसी प्रकृति के मध्य अनेक पशु–पक्षियों को बनाया गया है।

राधा–कृष्ण – इस शैली में राजा सावन्त सिंह को कृष्ण एवं उसकी पत्नी बनी–ठनी को राधा के रूप में चित्रित किया गया है। यह सभी चित्र परमात्मा में आत्मा के मिलन को दर्शाते हैं।

वर्ण विधान – इस शैली में चटक रंगों का प्रयोग किया गया है। इसमे लाल, पीले नीले रंगों का बहुतायत से

प्रयोग मिलता है। गोलाई देने के लिये रंगों में तान व पोत का प्रयोग बहुत अच्छी प्रकार से किया गया है।

रात्रि कालीन दृश्य – रात्रि कालीन दृश्य में ''चाँदनी रात में नौकायन'' को बखूबी बनाया गया है। इसके अतिरिक्त दीपावली की जगमगाहट में रात्रि कालीन दियों का पीले रंग से बहुत ही खुबसूरत बनाया गया है। इसमें टिमटिमाते दीपकों का सा आभास होता है।

रेखांकन – सभी आकृतियों के रेखांकन बारीक लचीली गतिमान बनायी गयी है।

हाड़ौती चित्रशैली

हाड़ौती चित्रशैली का क्षेत्र –

कोटा बूँदी रियासतों को मिलाकर जो सम्मिलित क्षैत्र बनता है उस समस्त क्षैत्र को हाड़ौती प्रदेश कहा जाता है। यह क्षैत्र राजस्थान के पूर्वी–दक्षिणी भाग का क्षैत्र है जो घने जंगलों से आच्छादित है। इस क्षेत्र में दो शैलियाँ कोटा व बूँदी उपशैलीयों का विकास हुआ दोनों ही शैलियाँ अपने आप में उत्कृष्टता लिये हुये हैं। समस्त छोटे–बड़े सामन्तों ने कलाकारों को आश्रय देकर चित्रकला के प्रति अपनी विशेष रूचि का परिचय देकर चित्रण किया है।

कोटा शैली के प्रमुख विषय –

इस शैली के प्रमुख विषय नायिका भेद, भागवत पुराण, ढोला मारू तथा शिकार के चित्र बहुतायता से बनाये गये हैं। इस शैली पर मुख्यतः, बृज शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

कोटा शैली की प्रमुख विशेषताएं –

मानवाकृतियाँ – इस शैली में मानवाकृतियों को गठिला व भारी शरीर लिये बनाया गया है। बड़ी आँखें, तीखी नाक इसी प्रकार स्त्री व पुरुष दोनों का चित्रण पुष्ट एवं प्रभावशाली बनाये गये हैं।

वेशभूषा – कोटा शैली में पुरुषों को अंगरखा पहने व सिर पर सुसज्जित पगड़ियाँ पहने चित्रित किया गया है। वहीं स्त्री आकृतियों को ओढ़नी, चोली व घाघरा पहने बनाया गया है। ओढ़नी को पारदर्शी व सुनहरा काम युक्त बनाया गया है।

शिकार दृश्य – कोटा शैली की प्रमुख विशेषता इसके शिकार दृश्य के चित्रण है जिसमें राजाओं को प्रभावशाली ढंग से शिकार करते दिखाया गया है। इन चित्रों में शेर, चीते, हिरण, सुअर आदि पशुओं का शिकार करते दृश्य बड़े प्रभावी बन पड़े हैं।

रंग योजना – इस शैली में प्रमुखतः लाल, हरा, सुनहरी, नीला व कहीं–कहीं काले व सफेद रंगों का प्रयोग विशेष रूप से किया गया है।

त्योहार व उत्सव के चित्र – इस शैली की एक प्रमुख विशेषता भारतीय त्योहार, होली, दीपावली, नवरात्रा आदि को बड़ी ही बखूबी से चित्रण किया गया है।

बूँदी चित्रशैली

बूँदी शैली राजस्थानी परिदृश्य में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह शैली स्वतन्त्र एवं मौलिकता के कारण अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं।

बूँदी चित्रशैली के प्रमुख विषय –

इस शैली में राग रागिनी, बारहमासा, नायक–नायिका भेद, कृष्ण–लीलायें, दरबारी दृश्य, शिकार के दृश्य एवं उत्सव व त्योहार के दृश्य आदि पर चित्रण कार्य किया है। पौराणिक कथाओं व घरेलू जीवन के चित्र भी इस शैली में बनाये गये हैं।

बूँदी शैली की प्रमुख विशेषतायें –

मानवाकृतियाँ –इस शैली की पुरुष आकृतियाँ भरे हुये बदन लिये

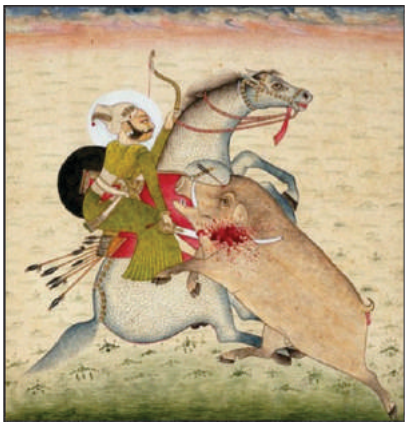

बनायी गयी हैं। इसमें गोल चेहरे, मरी हुई गर्दन, पतले होठ, छोटी नाक, मारी चिंबुक लिये गतिमान रेखाओं से अंकन किया गया है। वहीं स्त्री आकृतियाँ लम्बी व पतली बनायी गयी हैं।

वेशभूषा – बूँदी शैली में पुरुष आकृतियों को लम्बा चक्कर द्वार जामा, झुकी हुयी पगड़ी, दाढ़ी मूँछ युक्त बनाया गया है। इनके काम में दुपट्टा बाँधे व चुस्त पायजामा पहने बनाया गया है। वहीं स्त्री आकृतियों को सिर पर ओढ़नी, कसी हुई चोली, काले रंग के घाघरे पहने बनाया गया है। आभूषणों का प्रयोग भी इस शैली में किया गया है।

भवन – इस शैली भवनों को विशेषरूप से चित्रित किया गया है। जिसमें छतरियाँ, गोल गुम्बज, झरोकें, बेल बूटेदार जालियाँ, सुन्दर चित्रयुक्त दीवारें, पर्दे व बैठने का आसन का चित्रण इस शैली में बड़ी सुन्दरता से किया गया है।

प्रकृति चित्रण – इस चित्र शैली में प्रकृति को बड़े सुन्दर ढ़ंग से बनाया गया है। बादलों से भरा आकाश, कमल पुष्प से भरे तालाब, पक्षी में हंस, बतखें, मोर तोते तथा पशुओं के हिरण, बन्दर, सिंह आदि के चित्र बड़े मनमोहक बन पड़े हैं।

रंग योजना – बूँदी शैली के सात रंगों का प्रयोग किया गया है। जिसमें गुलाबी, लाल, सुनहरी व हरे रंग का प्रयोग अधिक मात्रा में किया गया है। काला रंग का प्रयोग इस चित्र शैली की विशेषता है जिसमें स्त्रियों के घाघरे को काले रंग से चित्रित किया गया है।

ढूढ़ाड़ चित्रशैली

ढूढ़ाड़ चित्रशैली का क्षेत्र –राजस्थान में जयपुर, आमेर, अलवर, शेखावटी एवं उनियारा क्षेत्र को मिलाकर ढूढ़ाड़ क्षेत्र कहा जाता है। इस क्षेत्र में उक्त नामों से सम्बन्धित उप शैली का विकास हुआ। इसमें सबसे प्रमुख रूप से आमेर (अम्बर) या जयपुर उप शैली ने विकास किया।

जयपुर चित्रशैली

जयपुर राजस्थान के प्रमुख राज्यों में से एक महत्वपूर्ण राज्य था। यह राज्य अपने भव्य भवनों एवं शक्तिशाली नरेशों के कारण भी अधिक प्रभावशाली रहा। जयपुर राज्य का राजस्थानी राज्यों में सबसे पहले मुगलों से सम्बन्ध स्थापित हुआ। 1562 ईस्वी में राजा भगवानदास ने अपनी जेष्ठ पुत्री का विवाह सम्राट अकबर के साथ कर इस सम्बन्ध को और मजबूत बनाया।

जयपुर चित्रशैली के प्रमुख विषय –वैष्णव सम्प्रदाय का जयपुर शैली पर गहरा प्रभाव था। गोवर्धनधारी कृष्ण, रासमण्डल (कृष्णलीला) नायिका भेद, राग रागिनी, बारह मासा, भागवत पुराण, दुर्गा सप्तशती, बिहारी

सतसई, व्यक्ति चित्रों को प्रमुखता से बनाया गया है।

जयपुर चित्रशैली की प्रमुख विशेषताएँ –

आकृतियाँ – जयपुर शैली में शारीरिक आकृतियों को सुगठित ढंग से गोल चेहरों के रूप में बनाया गया है सीमा रेखाओं द्वारा चेहरे पर कोमलता का प्रभाव दर्शाया गया है। आकृतियों में एक चश्म चेहरे रेखाओं में सफाई गोलाई का भाव उत्पन्न किया गया है।

वेशभूषा – जयपुर शैली में पुरुष आकृतियों को ढ़ीले पायजामे तथा अंगरखियाँ पहने बनाया गया है गले में मोतियों की माला को पहनाया गया है। वहीं स्त्रियों को गहरे रंग के घाघरे में चित्रित किया गया है। कसी हुई चोली एवं पारदर्शी ओढ़नी पहने दर्शाया गया है।

भवन – यह शैली तथा वास्तविक नगर अपने भव्य भवनों, महलों, चौराहों मीनारों, छतरियों के लिये प्रसिद्ध हैं। इन्हीं सभी रूपों को चित्रकार ने अपने सुन्दर चित्रों में चित्रित किया है।

रंग विधान – जयपुर शैली में शीतल रंगों का प्रयोग अधिक किया गया है तथा रेखाओं को बारीक बनाने के लिये सुनहरी स्याही का प्रयोग कर उसे श्रेष्ठता प्रदान की गयी है तथा चित्रों में रंग योजना के अनुसार छाया प्रकाश को बड़ी उत्तमता एवं सहजता के साथ चित्रण किया गया है।

महत्वपूर्ण बिन्दु–

1. राजस्थानी चित्रकला को भौगोलिक दृष्टि से तथा शैलीगत आधार पर चार (मेवाड, मारवाड, ढूढाड, हाड़ौती) भागों मे बांटा गया है।
2. राजस्थानी चित्रकला के प्रमुख विषय– पौराणिक एवं कृष्णलीला के चित्र, रागमाला व ऋतुओं के चित्र, राजसी वैभव के चित्र, घरेलु जीवन के चित्र हैं।
3. मेवाड़ शैली का सौन्दर्य विशाल झीलों, अरावली पर्वत श्रृंखलाओं, विशाल किलो, झीलों में बने महल, शिकार दृश्य चित्रकारों को प्रेरणा देते है।
4. मारवाड क्षेत्र को जन जीवन बहुत कठिन है परन्तु इस क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्परायें बहुत ही महान एवं श्रेष्ठ हैं।
5. हाड़ौती क्षेत्र राजस्थान के पूर्वी–दक्षिणी भाग का क्षेत्र है जो घने जंगलों से आच्छादित है। इस क्षेत्र मे कोटा व बूंदी शैली का विकास हुआ जिनमे शिकार दृश्यों को बहुतायता से बनाया गया है।
6. राजस्थान में जयपुर, आमेर, अलवर, शैखावटी, उनियारा क्षेत्र को मिलाकर ढूढ़ाड़ क्षेत्र कहा जाता है। यह क्षेत्र भव्य महलों, हवेलियों व शक्तिशाली नरेशो के कारण प्रभावशाली रहा है इस कारण कला का विकास यहाँ श्रेष्ठता से हुआ है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. राजस्थानी चित्रकला को भौगोलिक दृष्टि से कितने भागों मे बांटा गया है–
   (अ) 2 (ब) 3 (स) 4 (द) 6
2. राजस्थान के लघुचित्र एवं पोथी चित्रो के निर्माण का मुख्य उद्देश्य था–
   (अ) राजाओं की स्तुति (ब) जागीरदारों की स्तुति (स) कृष्ण की स्तुति (द) आराध्यदेव की स्तुति
3. राजस्थान की पोथी चित्रणकला का मूलस्त्रोत क्या है–
   (अ) लोक चित्रकला (ब) प्राचीन अपभ्रंष कला (स) अजन्ता शैली (द) उपरोक्त सभी
4. नाथ द्वारा के मुख्य मन्दिर मे किसकी प्रतिमा स्थापित है–
   (अ) श्री नाथ जी (ब) श्री राम जी (स) श्री कृष्ण जी (द) श्री विष्णु जी
5. किशनगढ शैली किस शैली की उपशैली है–
   (अ) मेवाड (ब) मारवाड (स)ढूढांड (द) हाडौती

अतिलघुरात्मक प्रश्न–

1. नाथद्वारा में किस सम्प्रदाय का मुख्य मंदिर है?
2. किशनगढ शैली के प्रमुख चित्र का नाम लिखिए?
3. किस शैली मे स्त्रियों के नयन खंजन पक्षी के समान बनाये गये है?
4. सबसे अधिक शिकार दृश्य किस शैली मे बने है?
5. वैष्णव सम्प्रदाय का किस शैली पर गहरा प्रभाव है?

लघुरात्मक प्रश्न–

1. रागमाला और ऋतुओं के चित्र में चित्रकार ने क्या दर्शाया है?
2. राजसी वैभव के चित्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. राजस्थानी चित्रकला में चित्रकार ने घरेलू जीवन के चित्रों मे किन–किन विषय आधारित चित्रों का निर्माण किया है?
4. अलंकारिक चित्रों से आप क्या समझते है?
5. रात्रिकालीन चित्रण का निर्माण किस शैली मे अधिक हुआ है तथा उनके विषय क्या है?

निबन्धात्मक प्रश्न–

1. राजस्थानी चित्रकला का परिचय देते हुए उसके प्रमुख चित्र विषयों पर आलेख लिखिए?
2. किशनगढ शैली की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए?
3. ढुंढ़ाड़ चित्रशैली का परिचय देते हुए उनके विषय एवं विशेषताओं का वर्णन कीजिए?
4. शिकार दृश्य किस–किस शैली मे प्रमुखता से बने है प्रमुख शिकार दृश्यचित्रों का वर्णन कीजिए?
5. मेवाड शैली की प्रमुख विशेषताएँ बताइए?

बहुचयनात्मक उत्तरमाला –

1. स. 2. द 3. अ 4. अ 5. ब